



पत्र-पुष्प



“अमृतवेले से सर्व ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम बनो”

दादी जी की शुभ प्रेरणायें 24-08-22

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सर्व ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन कर मर्यादा पुरुषोत्तम बनने वाली श्रेष्ठ आत्मायें, कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा सर्व की ब्लैसिंग प्राप्त करने वाली सफलता मूर्त निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने रक्षाबंधन और जन्माष्टमी के पावन पर्व खूब उमंग-उत्साह, हर्ष उल्हास के साथ मनाये, अनेक आत्माओं को पवित्र और योगी बनने का शुभ सन्देश देते, आने वाली स्वर्णिम दुनिया की खुशखबरी सुनाई। सभी तरफ के बहुत अच्छे-अच्छे समाचार प्राप्त हो रहे हैं। रिटर्न में मीठा बाबा अपने ऐसे सबूत देने वाले सपूत बच्चों को अपने स्नेह की बांहों में समा रहे हैं। अब तो समय की समीपता प्रमाण हम सबको बाप समान बनने के लिए सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का तीव्र पुरुषार्थ करना है। साथ-साथ मन्सा-वाचा और कर्मणा तीनों प्रकार की सम्मिलित सेवाओं से परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनना है।

सम्पूर्णता की मंजिल को समीप अनुभव करने के लिए संगमयुगी ब्राह्मण बच्चों को सर्व ईश्वरीय मर्यादायें जीवन में धारण कर मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है। यह ईश्वरीय मर्यादायें ही ब्राह्मण जीवन के कदम हैं। अमृतवेले से रात को सोने तक हर कदम मर्यादा अनुकूल, दृष्टि, वृत्ति, स्मृति, बोल और कर्म हो। स्मृति में रहे कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ और सभी आत्मायें श्रेष्ठ बाप की सन्तान हैं। यह वैरायटी आत्मायें वैरायटी पार्ट बजाने वाली हैं। देह को देखते भी आत्मा ही देखने में आये। वृत्ति सदा शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न हो। दृष्टि सबके प्रति सदा निर्दोष हो। बोल मधुर और कर्म सुखदाई हों। कभी परचितन के वशीभूत हो किसी के अवगुणों का वर्णन नहीं करना है। हर आत्मा को गुणमूर्त से देखना है। अगर कोई मर्यादा के विपरीत कार्य कर रहे हैं तो उसके खुद ही वकील, जज नहीं बनना है। बापदादा और निमित्त बनी हुई आत्माओं को बताना, यही ईश्वरीय कायदा है। ऐसे हम सबकी उन्नति के लिए समय प्रति समय बापदादा अनेकानेक इशारे देते हैं, जिन्हें हम अपने स्वरूप में लाते हुए सदा उड़ती कला में उड़ते रहें। चलते-चलते कभी भी रूकावट का अनुभव न हो। संकल्प में भी किसी मर्यादा का उल्लंघन न हो। समय प्रमाण तमोगुणी आत्माओं से, प्रकृति के तमोगुणी वायुमण्डल, वायुब्रेशन से बचने का साधन यह ईश्वरीय मर्यादायें ही हैं इसलिए दृढ़ता से संकल्प करना है कि मुझे मर्यादाओं की लकीर से कभी भी बाहर नहीं निकलना है। बोलो, ऐसा ही सभी ने पक्का वायदा किया है ना। हम सबका यही स्लोगन है कि हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। तो स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करना है।

अच्छा - आप सभी ने बरसात के दिनों में बहुत अच्छी तपस्या की होगी। इस बार आबू में भी पानी की तेज बरसात के साथ-साथ ज्ञान की भी बहुत अच्छी बरसात हो रही है। सब तरफ ज्ञान योग की तपस्या भट्टियां चल रही हैं। पूरे भारत वर्ष से हजारों बाबा के बच्चे मधुबन वरदान भूमि में आकर खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। अभी अक्टूबर मास से बापदादा के घर में अव्यक्त बापदादा की अव्यक्त अनुभूतियां करने, अपनी झौली वरदानों से भरने के लिए देश विदेश के अनेकानेक बच्चे अपने-अपने टर्न अनुसार आते रहेंगे। अच्छा - आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा।

सभी को हमारी बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



मर्यादा पुरुषोत्तम बनो, पुरुषोत्तम स्थिति का अनुभव करो

1) यह पुरुषोत्तम संगमयुग मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का युग है। पुरुष नहीं, नारी नहीं लेकिन पुरुषोत्तम हैं, इसी स्मृति में सदा रहो। पुरुषों में उत्तम पुरुष प्रजापिता ब्रह्मा को कहा जाता है। तो ब्रह्मा के बच्चे आप सब ब्रह्माकुमार कुमारियाँ भी पुरुषोत्तम हो। जो ऐसी पुरुषोत्तम स्थिति में रहते हैं उनके बोल भी ऐसे होते हैं जो सुनने वाले चात्रक रहते हैं। उनके वाक्य नहीं, अनमोल महावाक्य होते हैं।

2) आपका टाइटल है मर्यादा पुरुषोत्तम, ये मर्यादायें ही ब्राह्मण जीवन के कदम हैं। अगर कदम पर कदम नहीं रखा तो मंजिल कैसे मिलेगी! ये मर्यादायें ही कदम हैं। अगर इस कदम में थोड़ा भी नीचे-ऊपर होते हो तो मंजिल से दूर हो जाते हो और फिर मेहनत करनी पड़ती है और बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती, कहते हैं सहज योगी और करते हैं मेहनत!

3) बापदादा के कर्तव्य की स्मृति रखो कि बापदादा के साथ मैं भी अधर्म विनाश और सतधर्म की स्थापना के कर्तव्य अर्थ निमित्त बनी हुई हूँ। जो अधर्म के विनाश अर्थ निमित्त हैं वह स्वयं फिर अधर्म का कार्य वा दैवी मर्यादा को तोड़ने का कर्तव्य कैसे कर सकते हैं! मैं मास्टर मर्यादा पुरुषोत्तम हूँ तो मर्यादाओं को तोड़ नहीं सकता। ऐसी स्मृति रखने से समान और सम्पूर्ण स्थिति हो जायेगी।

4) ब्रह्माकुमार तो हो लेकिन ब्राह्मणों के कुल की मर्यादाओं को जानकर ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम बनो जो आपका एक एक संकल्प वायुमण्डल पर प्रभाव डाले। जो फुल होता है वह कभी फेल नहीं होता। फुल की निशानी है एक तो फील नहीं करेगा, दूसरा फेल नहीं होगा और कोई भी फलो नहीं होगा।

5) मर्यादा पुरुषोत्तम बनने के लिए सदा के स्नेही बनो। बाप का स्नेही बनना अर्थात् सदा सहयोग प्राप्त होना, जिससे मुश्किल बात सहज हो जाती है। जो सदा स्नेही होंगे उनकी सूरत से सदा स्नेही की मूर्त्त प्रत्यक्ष दिखाई देगी। उन्हें कोई भी मर्यादा पालन करने में मेहनत का अनुभव नहीं होगा।

6) जो मुरब्बी बच्चे हैं उन्हें ही मास्टर सर्वशक्तिवान् अथवा मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। उनका एक संकल्प भी मर्यादा के

विपरीत नहीं चल सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम अर्थात् कोई भी संकल्प रूपी कदम ईश्वरीय मर्यादा की लकीर के बाहर न हो। अमृतवेले से रात के सोने तक हर कदम मर्यादा अनुकूल, स्मृति, वृत्ति और दृष्टि भी सदा ही मर्यादा प्रमाण हो।

7) संगमयुगी कायदों में फायदा है। ये बंधन नहीं है लेकिन यह निर्बन्धन बनाने का साधन है। मर्यादा के अन्दर रहने वाले, मर्यादाओं प्रमाण चलने वाले ही मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। ब्राह्मण जीवन में बेहद के व्रत को पालन करना ही मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है। जैसे भक्त लोग विशेष दिन पर कोई न कोई प्रकार का व्रत रखते हैं, लेकिन उनका है एक दिन के लिए व्रत और आपका है अविनाशी बेहद का व्रत। ब्राह्मण जन्म में आपने पवित्रता का व्रत धारण कर लिया।

8) मर्यादा पुरुषोत्तम आत्माओं का एक-एक बोल ऐसा होता जिसे सुनने के लिए सब चात्रक होते, सोचते हैं कि यह कुछ बोलें और हम सुनें, इसलिए जो भी बोलते हो वह व्यक्ति, समय, संगठन, स्थान, वायुमण्डल को देखकर बोलो। रमणीकता का गुण अच्छा है लेकिन व्यर्थ की हंसीमजाक न हो। अधिक बोल न हों, किसी के दिल को दुःखाने वाले बोल न हों, आराम देने वाले बोल हों तब कहेंगे मर्यादा पुरुषोत्तम।

9) आप बच्चे लॉ मेकर्स हो, मर्यादायें वा नियम बनाने वाले हो इसलिए जो बात मन को पसन्द है, मन मानता है, उसी प्रमाण मर्यादा की लकीर के अन्दर चलते चलो। मजबूरी से नहीं चलो, जो खुशी से किया जाता है उसमें बंधन नहीं लगता है।

10) किसी भी बात में जब मेहनत का अनुभव हो तो उस समय चेक करो कि किस श्रीमत के मर्यादा की लकीर से बाहर जा रहे हैं? चाहे संकल्प में, चाहे बोल में, चाहे कर्म में जब मर्यादा की लकीर से बाहर निकलते हो तब माया की आकर्षण मेहनत कराती है।

11) अभी जो अनेक साधन मिले हुए हैं, यह थोड़े समय के लिए हैं। इन आराम के साधनों को कार्य में लगाते राम को नहीं भूल जाना। सच्ची सीता होकर रहना। मर्यादा की लकीर से संकल्प रूपी अंगूठा भी नहीं निकालना क्योंकि यह साधन यदि बिना साधना के यूज करेंगे तो स्वर्ण-हिरण का काम कर लेगा।

12) मर्यादा पुरुषोत्तम उसे कहा जाता जो किसी भी व्यक्ति और वैभव के लगाव और झुकाव से अपने आपको सेफ रखता है। अगर किसी के लगाव झुकाव में आये तो बाप के स्नेही बनने के बजाए, सहजयोगी बनने के बजाए, कभी सहयोगी, कभी सहजयोगी, कभी वियोगी - दोनों अनुभव करते रहेंगे। कभी याद, कभी फरियाद - ऐसी अनुभूति में रहेंगे तो कम्पलेन कभी पूरी नहीं होगी।

13) मर्यादा की लकीर तो ब्राह्मण जीवन, ब्राह्मण जन्म से बापदादा ने दे दी है। मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने वाले बाप के आज्ञाकारी बच्चे माया को दूर से ही पहचान लेते हैं। जब पहचानने में देरी करते हैं वा गलती करते हैं तब माया से घबरा जाते हैं। जैसे यादगार में कहानी सुनी है - सीता ने धोखा क्यों खाया? क्योंकि पहचाना नहीं। माया के स्वरूप को न पहचानने कारण धोखा खाया। अगर पहचान ले कि यह ब्राह्मण नहीं, भिखारी नहीं, रावण है तो शोक वाटिका का इतना अनुभव नहीं करना पड़ता।

14) मायाजीत बनने का बहुत सहज साधन है - सदा बाप के साथ रहो। साथ रहना अर्थात् मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहना। इससे एक-एक विकार के पीछे विजयी बनने की मेहनत करने से छूट जायेंगे। जब बीजरूप बाप की याद से विकारों के बीज को खत्म कर देंगे तो बार-बार मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। बीजरूप को साथ रखो, तो यह माया का बीज ऐसे भस्म हो जायेगा जो फिर कभी भी उस बीज से अंश भी नहीं निकल सकता।

15) दूसरे का अवगुण वर्णन करना अर्थात् स्वयं भी परचिन्तन के अवगुण के वशीभूत होना है। दूसरे की कमजोरी वर्णन करना अर्थात् अपने समाने की शक्ति की कमजोरी जाहिर करना है इसलिए किसी भी आत्मा को सदा गुणमूर्त से देखो। अगर किसकी कोई कमजोरी है भी, मर्यादा के विपरीत कार्य है भी तो बापदादा की निमित्त बनाई हुई सुप्रीम कोर्ट में लाओ। खुद ही वकील और जज नहीं बन जाओ - यह ईश्वरीय कायदा है।

16) कई बच्चे चलते-चलते रूक जाते हैं, रूकने का कारण है, किसी न किसी मर्यादा वा नियम का उल्लंघन। यह संगमयुग मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का युग है। आप सब ब्रह्माकुमार कुमारियाँ पुरुषोत्तम हो। इस स्मृति में रहने से सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे, नीचे नहीं रूकेंगे।

17) संगमयुग की मर्यादायें ही पुरुषोत्तम बनाती हैं, इसलिए मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। इन तमोगुणी मनुष्य आत्माओं और तमोगुणी प्रकृति के वायुमण्डल, वायब्रेशन से बचने का

सहज साधन ईश्वरीय मर्यादायें हैं इसलिए मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से भी बाहर नहीं निकलना।

18) स्मृति के लिए मर्यादा की लकीर है - सदा स्मृति में रहे कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ और सर्व भी एक श्रेष्ठ बाप की सन्तान आत्मायें हैं। वैरायटी आत्मायें वैरायटी पार्ट बजाने वाली हैं। यह पहला पाठ नैचुरल रूप में स्मृति स्वरूप में रहे। देह को देखते भी आत्मा को देखो। यह समर्थ स्मृति हर सेकण्ड स्वरूप में आये।

19) कोई भी बीमारी बदपरहेज वा कमजोरी से आती है इसलिए न तो कमजोर बनो और न मर्यादाओं की परहेज से वा मर्यादाओं की लकीर से बाहर आओ। किसी भी आर्टिफिशल आकर्षण वा नकली रूप के पीछे आकर्षित होना माना मर्यादा की लकीर अर्थात् सुख के संसार की बाउन्ड्री पार करना। बाउन्ड्री पार की तो शोकवाटिका में चले जायेंगे। बाउन्ड्री के अन्दर रहो तो जंगल में भी मंगल है। त्याग में भी भाग्य है। बिन कौड़ी बादशाह हो। बेगरी जीवन में भी प्रिन्स की जीवन है।

20) तमोगुणी मनुष्य आत्माओं और तमोगुणी प्रकृति के वायुमण्डल, वायब्रेशन से बचने का सहज साधन यह ईश्वरीय मर्यादायें हैं। मर्यादाओं के अन्दर रहो तो मेहनत से बचे रहेंगे। मेहनत तब करनी पड़ती है जब मर्यादाओं की लकीर से संकल्प, बोल वा कर्म से बाहर निकल आते हैं।

21) जो अधीन होता है वह सदैव मांगता रहता है, अधिकारी सर्व प्राप्ति स्वरूप रहता है। ऐसे ही जो मर्यादा की लकीर का उल्लंघन करते हैं, उनकी स्थिति फकीर के समान बन जाती है। वह कहेंगे कृपा करो, आशीर्वाद करो, सहयोग दो, स्नेह दो। लेकिन मेरा अधिकार है, उनको कहेंगे बालक और मालिक।

22) समय प्रति समय वैभवों के साधनों की प्राप्ति बढ़ती जा रही है। आराम के सब साधन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यह प्राप्तियां बाप के बनने का फल मिल रहा है। तो फल को खाते बीज को नहीं भूल जाना। आराम में आते राम को नहीं भूल जाना।

23) कभी भी मर्यादा तोड़ करके किसी को सुख नहीं देना। मर्यादापूर्वक दिल से सुख दो। दिखावा-मात्र नहीं, तो आपका पुरुषार्थ सहज हो जायेगा। जो सच्ची दिल से निःस्वार्थ सेवा में आगे बढ़ते जाते हैं, उन्हीं के खाते में पुण्य जमा होता जाता है।

24) अमृतवेले से लेकर जो मर्यादायें स्मृति, वृत्ति, दृष्टि और कृति सबके प्रति बनी हुई हैं वे प्रवृत्ति में रहते भी बुद्धि में सदा स्पष्ट रहें और हर संकल्प मर्यादा प्रमाण चलता रहे - यह हर एक की जिम्मेवारी है क्योंकि प्रवृत्ति में रहने वाले सबके आगे सैम्पुल हैं। सैम्पुल को देखकर ही लोगों को व्यापार करने की हिम्मत वा उल्लास आता है। हर एक प्रत्यक्ष प्रमाण देखना चाहते हैं।

25) सुख देने में सिर्फ ध्यान रखना - कभी मर्यादा तोड़ करके किसको सुख नहीं देना। दिल से मर्यादापूर्वक सुख दो। दिखावा-मात्र नहीं, दिल से। सुख कर्ता के बच्चे एक सेकण्ड में अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सुख दो तो दुआयें जमा हों।

26) जो पुरुषोत्तम स्थिति में रहते हैं उनके ऑर्डर पर अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प के आधार पर यह विनाशकारी साधन व प्रकृति अपना कार्य करती है। तो पुरुषोत्तम स्थिति में स्थित हो संगठन को सम्पूर्ण बनाने के संकल्प के आधार से प्रकृति को ऑर्डर देने के अधिकारी बनो। पुरुषोत्तम अर्थात् हर संकल्प और हर कदम उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ हो, साधारण न हो, लौकिक न हो और व्यर्थ न हो।

27) युग परिवर्तन होने से दुःख के संसार से सुखों के संसार में आ गये। साधारण आत्मा से पुरुषोत्तम बन गये। प्रभु परिवार में आना अर्थात् जन्म जन्मान्तर के लिए तकदीर की लकीर श्रेष्ठ बन जाना। प्रभु परिवार अर्थात् वार से परे हो गये। कभी भी प्रभु के बच्चों पर वार नहीं हो सकता। ऐसी पुरुषोत्तम स्थिति बन गई तो प्रकृति भी आपकी दासी बन सेवा करेगी।

28) संगमयुग पुरुषोत्तम युग है, इस युग में पार्ट बजाने वाली आप

अलौकिक और न्यारी आत्मायें हो! यह संगमयुग भी सुखधाम है, कितने दुःखों से बच गये हो। साक्षी होकर देखो कि दुनिया कितनी दुःखी है, उनकी भेंट में आप कितने सुखी हो। तो सदा हम पुरुषोत्तम युग की पुरुषोत्तम आत्मायें, सुख स्वरूप श्रेष्ठ आत्मायें हैं, इसी स्मृति में रह सर्व ईश्वरीय मर्यादाओं का दृढ़ता से पालन करो।।

29) ब्राह्मणों को ही पुरुषोत्तम कहा जाता है। पुरुषोत्तम अर्थात् पुरुषों से उत्तम, साधारण मनुष्यात्माओं से उत्तम। पुरुष आत्मा को भी कहते हैं, श्रेष्ठ आत्मा बनने वाले अर्थात् पुरुषों से उत्तम पुरुष बनने वाले। देवताओं को भी पुरुषोत्तम कहते हैं क्योंकि देव-आत्मायें हैं। आप देव-आत्माओं से भी ऊंचे ब्राह्मण सर्व मर्यादाओं को जीवन में धारण कर रूहानी नशे में रहने वाले हो।

30) मर्यादा प्रमाण चलने वाली आप पुरुषोत्तम आत्माओं का कर्तव्य भी सर्वश्रेष्ठ है। उठा, खाया-पीया, काम किया - यह साधारण कर्म नहीं, साधारण कर्म करते भी श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ स्थिति हो। जो देखे वह महसूस करे कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं। कैसे भी वातावरण में हो, कैसे भी संगठन में हो लेकिन जैसे हीरा अपनी चमक छिपा नहीं सकता, ऐसे पुरुषोत्तम आत्माओं की श्रेष्ठ झलक सबको अनुभव होनी चाहिए।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

**“अन्तिम पेपर में पास होने की तैयारी -
बार-बार अशरीरी बनने की ड्रिल करो” (गुल्जार दादी जी 2007)**

ओम् शान्ति। हमारे बाबा का दिया हुआ एक महामंत्र है। इस एक ही शब्द में हमें अपने स्वरूप की, बाबा की और अपने घर की स्मृति आ जाती है क्योंकि हम भी शान्त स्वरूप हैं। हमारा बाबा भी शान्ति का सागर है और हमारा घर भी शान्तिधाम है। तो ओम् शान्ति कहने से ही शान्ति का अनुभव होता है। अपने स्वरूप में स्थित होने से शान्त-स्वरूप हो जाते हैं। तो जहाँ शान्त-स्वरूप हो जाते हैं वहाँ हलचल ऑटोमेटिकली बन्द हो जाती है।

संगमयुग का जो अन्तिम काल है, उस समय की हमको क्या तैयारी करनी है? उसकी तैयारी कर ली है या करनी है? अन्तिम समय के हिसाब से बाबा ने दो शब्द कहे हैं - एक तो अचानक

होना है और एवररेडी रहना है। तो सबको ये दो शब्द याद रहते हैं ना? कभी भी बुलावा हो सकता है नेक्स्ट जन्म के लिए। इसीलिए बाबा ने अचानक के लिए कई बातें सुनाई हैं। जैसे आप अपनी हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझो क्योंकि सेकण्ड में क्या से क्या भी हो सकता है। इसलिए ऐसे समय पर नष्टोमोहा भी रहो और स्मृति-स्वरूप भी रहो। तो अन्तिम पेपर में पास होने के लिए, अभी से ही हमको क्या लक्ष्य रखना चाहिए, उसकी योजना अभी से बना लेना चाहिए क्योंकि सेकण्ड का पेपर होना है। सेकण्ड में क्या से क्या भी हो सकता है इसीलिए बाबा कहते अभी से अशरीरी भव का अभ्यास करना क्योंकि अन्त हमारी श्रेष्ठ हो उसके लिए अशरीरी भव का अभ्यास बहुत जरूरी है।

यह मन चारों ओर के दृश्य देख करके विचलित होगा लेकिन इस मन को कंट्रोल करना, मन की रूलिंग पॉवर हमारे हाथ में हो तो रूल करना, कंट्रोल करना, यह अभ्यास हो तब एक सेकण्ड में अशरीरी हो सकेंगे। कोई भी आकर्षण हमें खींचे नहीं तभी हम पास विथ ऑनर होंगे। तो सेकण्ड में अशरीरी बनने का अभ्यास हमको अभी से करना पड़ेगा।

हम जिस बात को नहीं चाहते हैं वो होता तो है यह सबके जीवन का अनुभव है। हम समझते हैं यह नहीं हो, कम-से-कम वेस्ट थॉट जो चलते हैं, उसके लिए भी सभी अभ्यास करते हैं कि व्यर्थ विचार नहीं आने चाहिए। लेकिन फिर भी आ ही जाते हैं, भिन्न-भिन्न रूप से माया आ जाती है, जो चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाती है, तो न चाहते भी क्यों आती है? कारण है बहुतकाल से बॉडी-कॉन्सेस में रहने का अभ्यास जो नेचुरल है वो विघ्न डालता है। तो यह अशरीरी बनने का अभ्यास अगर हम बहुतकाल से नहीं करेंगे तो बहुतकाल की मदद हमको नहीं मिलेगी।

तो बाबा कहते हैं मन के मालिक बनके बार-बार शरीर के भान से परे अशरीरी रहने का अभ्यास बहुतकाल का आवश्यक है। इसलिए बाबा ने यह 5 स्वरूपों का अभ्यास बीच-बीच में बार-बार करने का होमवर्क दिया है। बार-बार नहीं तो कम-से-कम 8 बारी तो ड्रिल करने का होमवर्क दिया है क्योंकि बार-बार करने से ड्रिल का लिंक जुटा रहता है। अगर एक ही बारी आपने 4-5 बारी करके अपना काम पूरा कर दिया, अब जो किया वो तो अच्छा है रिजल्ट तो उस समय अच्छी होगी। लेकिन सारे दिन का आपका निरंतर लिंक रहे, वो नहीं रहेगा। तो लिंक के लिए बाबा ने अलग-अलग टाइम 8 बारी करने को कहा क्योंकि अगर कोई भी चीज का लिंक टूट जाता है और उसे फिर जोड़ा जाता है तो उसमें फ़र्क हो जाता है लेकिन लिंक जुटा ही रहे तो वो ताकत एक और होती है। इसलिए बाबा ने 8 बारी यह अभ्यास करने को कहा है।

तो आत्मा रूप में स्थित होने की बाबा ने बहुत अच्छी एक युक्ति सुनाई है कि करावनहार की स्मृति से इन कर्मन्द्रियों से काम लेंगे तो मालिकपने का नशा रहेगा, खुशी रहेगी। तो मैं आत्मा करनहार हूँ, करावनहार हूँ इस कर्मन्द्रियों रूपी कर्मचारियों की भी मैं मालिक हूँ, तो मन-बुद्धि-संस्कार यह भी मेरे हैं, मैं नहीं हूँ। मैं शिवबाबा के नयनों का तारा हूँ, मैं शिवबाबा के दिलतख्त पर बैठने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ या मैं आत्मा परमधाम की यात्रा में जा रही हूँ, इस प्रकार से जो भी स्वमान बाबा देते हैं, उस स्वमान के

स्वरूप अनुसार हमारी स्मृति बनी रहे तो वो शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करायेगी। तो मैं आत्मा हूँ लेकिन कौन-सी आत्मा हूँ यह स्मृति सारे दिन में बीच-बीच में ला करके स्मृति-स्वरूप बनने की कोशिश करते रहना चाहिए। भले हम जानते हैं कि मैं आत्मा हूँ, लेकिन फिर भी स्वमान से जाने और आत्मा स्वरूप में अनुभव करें तो वो नशा और खुशी बहुत ही सुखदाई न्यारा और प्यारा अनुभव करायेगी।

तो मैं आत्मा हूँ इस अनुभूति में रहें। आत्मा का पाठ बहुत पक्का होना चाहिए। किसी से बोलते हैं, किसी को भी देखते हैं तो ऐसा स्पष्ट अनुभव हो, हम आत्मा आत्मा से बात कर रहे हैं, देख रहे हैं। मस्तक में देखते आत्मा की स्मृति से बात करो, एक दो को मिलो तो हमारी यह प्रैक्टिस चाहिए - किससे भी बात करें, किसे भी देखें तो स्वरूप की स्मृति अपनी भूले नहीं। अपने असली स्वरूप की नॉलेज है लेकिन उसकी अनुभूति में कम रहते हैं इसलिए बार-बार वही फिर फिर न चाहते भी बॉडी-कॉन्सेस की पुरानी स्मृति इमर्ज होती रहती है। तो अभी जो भी कहते हैं “मैं आत्मा अशरीरी हूँ” तो यह कहने से ही अशरीरीपन का अनुभव होना चाहिए। “मैं आत्मा हूँ” तो इस स्वरूप का अनुभव होना चाहिए। आत्मा समझने से परमात्मा की याद तो स्वतः ही आयेगी क्योंकि आत्मा का कोई से कनेक्शन नहीं है सिवाए परमात्मा के सिवाए।

अब सोचो कि मैं आत्मा शान्त-स्वरूप आत्मा हूँ तो वो तुरन्त साथ-साथ अनुभव होना चाहिए सिर्फ नॉलेज नहीं लेकिन अनुभव होना चाहिए। तो इस अटेन्शन में जब हम रहेंगे तभी हमारा अन्तकाल सुहाना होगा। बहुत करके भक्ति जो करते हैं वो भी यही कोशिश करते हैं कि मेरा अन्त बहुत श्रेष्ठ अच्छा हो जाये। तो हमारा भी अन्तिम काल ऐसा श्रेष्ठ हो, उसके लिए यह प्रैक्टिस चाहिए, भले काम में बिजी हो लेकिन बीच-बीच में और ही प्रैक्टिस यह करो कि जिस समय बहुत बिजी हो, उस समय ट्रायल करो मैं एक सेकण्ड में अशरीरी बन सकता हूँ? अगर यह प्रैक्टिस होगी तो जो बाबा चाहता है कि मेरे एक एक बच्चे के चेहरे से, चाल से यह पता पड़े कि यह किसका बच्चा है? यह कोई विशेष आत्मा है, साधारण आत्मा नहीं है, यह महसूस हो सामने वाले को, तब तो बाबा प्रत्यक्ष होंगे, यही देख करके कहेंगे कि वाह! यह कौन है! किसके हैं! तो हमको अभ्यास ऐसा करना चाहिए कि मैं सारे दिन में आत्म-अभिमान प्रैक्टिकल कितना टाइम रह सकता हूँ? ठीक है, यह चेक करो और अपने में चेन्ज लाओ। अच्छा - ओम् शान्ति।

बाबा हम बच्चों को पदमापदम याद और प्यार देता है तो हम कितनी बार बाबा को शुक्रिया देवें...। भगवान तो जी भर भरके देता है, बच्चे भी ड्रामा अनुसार बाबा से जो मिले वो चात्रक बन लेते रहते हैं। यह यज्ञ भी सभी के सहयोग की बूँद बूँद से तालाब हो गया है। बच्चे देते हैं तो बाबा बच्चों के लिए मकान बनाते हैं। किससे मांगने की जरूरत नहीं है।

बच्चे चात्रक समान ज्ञान की एक एक बूँद को मोती बनायेंगे तो यह जीवन हीरे तुल्य, हीरे, मोती, माणिक की माला में पिरो जायेंगे। जिसको ऐसा बनना है उसके चिंतन में सिवाए बाबा के और कुछ आता नहीं है। यह कमाई का टाइम है इसलिए बिगर मांगे मोती मिल रहे हैं, तो ले लो। मांगने से तो कौड़ियां ही मिली, और अब बिगर मांगे मोती मिल रहे हैं तो कितने हम रॉयल हो गये हैं! तो बाबा हमको वैल्यूएबल बना करके हमारे लाइफ की वैल्यू बढ़ा रहे हैं। दुनिया को यह पता चले कि हमको ऐसा बनाने वाला कौन है तब तो सब बाप की महिमा करेंगे। हम धर्म पिता नहीं बनते हैं, परमपिता के मैसेंजर बनते हैं। तो हम कितने भाग्यवान हैं। अब जिसको पास विथ ऑनर में आना हो तो क्या करे? सच्ची दिल और बड़ी दिल वाला बने। म्याऊं, म्याऊं न करे... थोड़ा-सा भी अन्दर एक बाहर दूसरा न करे, उनसे भगवान की नहीं बनती है। चलो खुश कर देगा, पर निरोगी काया बने, आयु बड़ी हो, विदेही और ट्रस्टी हो करके रहे, यह अनुभव उसको नहीं होगा। तो जिसके ऊपर बाबा की छत्रछाया है, उनके ऊपर माया की छाया नहीं पड़ सकती है। अभी संगमयुग पर परमात्मा से जैसा प्यार मिल रहा है, ऐसा प्यार तो सतयुग के माँ बाप से भी नहीं मिलेगा। थोड़ा भी मुरझाई हुई शक्ल है माना पढ़ाई में कमजोर है। क्या करूँ? अरे! मूँझते क्यों हो! तुम्हारा बाप जैसे करा रहा है वैसे कर लो। मूँझने और मुरझाने वाले फेल हो जाते हैं, फिर ऐसे बच्चों को माँ बाप प्यार नहीं करते हैं। और जो अच्छा पढ़ते हैं तो समझते हैं मेरा लायक बच्चा है। थोड़ा भी खराब संग मिला तो पढ़ाई में ध्यान नहीं रहेगा। तो बाबा हमारी केयर करता है तो उसका कितना शुक्रिया मानना चाहिए! हम उसकी केयर का ख्याल रखें, केयरलेस न रहें। बाबा के रत्नों से खेलने का अक्ल हो तो रत्नागर बन जायेंगे।

प्रश्न हमारे - उत्तर दादी जानकी जी के

प्रश्न:- दादी, आपको कभी स्ट्रेस (तनाव) होता है?

उत्तर:- बातें तो कई होती रहेंगी, न चाहते हुए भी होती रहेंगी। इतना बड़ा परिवार है, पर सूक्ष्म अन्दर से अपने आपको तनाव से फ्री रखना शोभा है। जिस घड़ी तनाव हुआ, शक्ल चेंज हुई। बाबा को कितना काम है... फिर भी बच्चों को आगे रखके करा रहा है। तो कुछ भी होता रहे, कुछ भी करते रहें पर चेहरे पर चेंज न आये। घड़ी-घड़ी, घड़ी देखने वाले को तनाव होता है। बार-बार जो सोचता है यह करना है, वह करना है... ऐसे सोचने वाले को तनाव होता है। तनाव वाला खुद भी तंग रहता है और दूसरों को भी तंग करता है। आप सिर्फ आज्ञाकारी होकर रहो तो बाबा आपही सबकुछ करेगा इसलिए कभी तनाव में आने की जरूरत ही नहीं है। कोई कहते हैं बहुत सेवा है, अरे! कुछ सेवा नहीं है। हल्के रहो तो तनाव नहीं होगा। बाकी ऐसा कभी कुछ आता है या होता है, तो भी हल्के रहें तो तनाव की बात नहीं रहेगी।

प्रश्न:- मन और बुद्धि में, चित्त और विवेक में क्या कनेक्शन है?

उत्तर:- अपने स्थिति को अच्छा रखने के लिए अन्दर से बड़ा इन्ट्रेस्ट हो, बड़ी अच्छी तीव्र इच्छा हो कि जो निज ज्ञान है उसको मैं कैसे यूज करूँ? क्योंकि ज्ञान यूज करने से योग अच्छा लगता है। ज्ञानदाता का ज्ञान यूज करेंगे तो आत्मा में शक्ति भरेगी। जिसके दिल में कुछ नहीं है उसका दिमाग अच्छा रहता है। दिल एकदम साफ हो, दिल सच्ची हो तो दिमाग ठण्डा रहेगा। तुम अपनी दिल को देखो और दिमाग को अच्छी तरह से चलाओ तो दिमाग ठीक रहेगा। अगर दिल में कोई भी बात होगी तो दिमाग ठीक काम नहीं करेगा। दृष्टि और व्यवहार में वो सरलता नहीं होगी। दिल में कुछ भी है तो मन शान्त नहीं हो सकता है। बुद्धि अगर स्थिर नहीं है तो योग नहीं लगता है। ऑटोमेटिक ईश्वर खींचे वो योग नहीं होगा। जैसे लौकिक सम्बन्ध में कोई प्यार में खींचता है, ऐसे ईश्वर अपने प्यार में खींचता है। तो जब तक बुद्धि ऐसे खींच में नहीं आई है, तो मन शान्त नहीं हो सकता है। मन जरा भी अशुद्ध व्यर्थ ख्याल में आया माना बुद्धि में ज्ञान है पर योग नहीं है। योग से जो शीतलता और शक्ति

आती है वो दिल दिमाग को ठीक रखती है। कई बार बुद्धि, विवेक का भी नहीं मानती है। सूक्ष्म में जाके अपने विवेक से पूछो, भले भगवान से न पूछो पर विवेक से पूछो कि क्या यह राइट है?

कई है विवेक द्वारा ही सीखते हैं। जब तक गलती फील नहीं करेंगे तो उसको छोड़ेंगे नहीं। अपने विवेक से भी अगर काम नहीं लिया तो क्या हुआ? फिर कहेंगे अपने आपको देखने, जानने के लिए टाइम नहीं है। चित्त में जो पुरानी स्मृतियां भरी पड़ी हैं, उसको मिटाया नहीं है। तो अपने चित्त की स्मृति को देखो कि पुरानी बातें मिट गई हैं और बाबा की नई बातें स्मृति स्वरूप में आई हैं? स्मृति मेरे स्वरूप में आई? यह स्थिति जब तक मेरी

नहीं आई है तब तक मरजीवा जन्म बिताने में क्या फायदा है? बाबा का बच्चा बन करके क्या फायदा? तो अभी क्यों नहीं सब मिल करके पुरुषार्थ करें जो पहले हम अपने लिए मास्टर धर्मराज बन जायें। स्वधर्म में टिकना माना सत् धर्म में टिकना। तो हम पहले अपने राज्य में, सच्चाई के धर्म में रहें तो कर्म में भी धर्म का असर रहेगा, फिर धर्म श्रेष्ठ, कर्म श्रेष्ठ बनते हैं। बाबा ऐसा बनाने के लिए अभी भी कितनी मेहनत करता है, कितना अच्छा यह खेल रचाया है। तो सब बातों को भूल, पास्ट को भी भूल। लेकिन जो सारे दिन में अपने लिए करना है वो कभी नहीं भूलो। वह मिस न हो क्योंकि कभी भी कुछ भी हो सकता है, समय का तो कोई भरोसा नहीं है।

(दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन - 1999)

देहभान रूपी कांटों के क्राउन को छोड़ लाइट का क्राउन धारण करो

1) बाबा ने कहा “चिरन्जीवी बच्चे, मायाजीत बच्चे” अब हमें वरदान मिल गया तो माया वार कर नहीं सकती। हमारी आंखों में बाबा बैठा है, हम तो कल जाकर शहजादे बनेंगे। हम कल जाकर मिचनू (छोटा बच्चा) बनेंगे। हमें तो नई दुनिया में जाना है, हमें तो ऐसा सुन्दर देवता बनना है, हम तो वह मूर्तियां हैं जिनका मन्दिर में गायन, पूजन होता। हमें यह देह देखनी ही नहीं है, हमें तो यह बाबा की दरबार दिखाई देती, यह लाइट का क्राउन सब पर दिखाई देता।

2) अभी हम सबको लाइट के घर जाना है। हर एक के मस्तक पर लाइट की थाली घूमती हुई देखो तो यह देह दिखाई ही नहीं देगी। हम बाबा के बच्चे आत्मा हैं, आत्मा लाइट है, उस लाइट के क्राउन को छोड़ देह-अभिमान में क्यों आते! लाइट के क्राउन को देखो तो देह-भान छूट जायेगा। देह का क्राउन कांटों का क्राउन है, लाइट का क्राउन हल्का शीतल कर देता है।

3) हम लाइट हाउस हैं - हमें सबको राह दिखानी है, सबकी रूहों को राहत देनी है। राहत देने वाले ने हमें राहत दी है, मैं कैसे कहूँ कि मुझे राहत नहीं। हम तो रुहानी राहत देने वाले राही हैं, सबको लाइट देनी है, ऐसी स्थिति में रहो तो बाकी सब स्थितियां खत्म हो जायेंगी।

4) काम महाशत्रु के संकल्पों को डोन्ट केयर करो, तूफानों में नहीं आओ। विकल्पों पर अटेंशन ही क्यों देते, अगर अटेंशन देंगे तो और ज्यादा आयेंगे। मैं ज्ञान सूर्य का बेटा, किचड़े को

खत्म करने वाला हूँ, मेरे पास माया का किचड़ा आ नहीं सकता। अगर उसको देखेंगे, हाथ लगायेंगे तो आ जायेगा। अगर संकल्प आये तो किनारा कर लो, अगर वह नींद फिटायें तो आप योग में बैठ जाओ, लेख लिखो, विचार सागर मंथन करो।

5) आप बाबा को कमजोरी की बातें मत सुनाओ, निर्बलता खत्म हुई क्योंकि हम मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। अगर आप सोचेंगे कि माया हैरान करती तो करेगी लेकिन संकल्प में दृढ़ता रखो कि माया आ नहीं सकती तो भाग जायेगी। आप अपनी मस्ती में रहो तो सब पुरानी बातें खत्म हो जायेंगी। बाबा से सर्व सम्बन्ध जोड़ो। बाबा की मस्ती में मस्त रहो, बिजी लाइफ इज दी गुड लाइफ, बिजी रहेंगे तो सब इजी हो जायेगा।

6) पढ़ाई और सर्विस में बिजी रहो, भाव-स्वभाव के नाज़-नखरे छोड़ दो। वह भी आपकी वृत्तियों को खराब करते हैं। प्यार करना है एक बाबा को, शक्ति लेनी है एक बाबा से। बाकी किसी से प्यार लेने की इच्छा नहीं रखनी है। बाबा से प्यार लो, किसी देहधारी के प्यार की इच्छा मत रखो। हमें तो लेके सहारा बाबा का, विश्व का कल्याण करना है। ऐसे विश्व का निर्माण करने वाले क्या खुद का निर्माण नहीं कर सकते!

7) यह है ही तमोप्रधान दुनिया - इसकी शिकायत मत करो। हमें कोई सड़ा हुआ चोला पहनना ही नहीं है। यह सड़ा हुआ, मरा हुआ वस्त्र है, आप उसकी शिकायत क्यों करते। यह है ही निर्बल, निर्बल की शिकायत थोड़ेही की जाती। मैं हूँ मास्टर

सर्वशक्तिमान और कहूँ कि यह छोटी सी माया वार करती है। चींटी महारथी को सुला दे तो क्या कहेंगे! उससे अपनी सम्भाल रखो। इस पुरानी दुनिया को देखो ही नहीं, सुनो ही नहीं।

8) संगदोष एक दो को बहुत गिराता है। मेरा संगी एक बाबा है। उसको साथ रखो तो दोस्तों का साथ नहीं खींचेगा। प्यारे सबके बनो, प्रिय किसको नहीं बनाओ। प्रिय एक बाबा को बनाओ तो सब तुम्हारे प्यारे रहेंगे। प्यार सबको करना है लेकिन किसके लिए प्यारे नहीं बनना है। किसके लिए प्यारे बनेंगे तो हृदय आ जायेगी। प्यारा बनना है एक का, बाकी सबसे न्यारा रहो। किसी के प्यार की आश नहीं रखनी है। सदा एक साथी के साथ रहो तो और किसी के संग का रंग नहीं लगेगा। बाबा का संग मुझे सबको लगाना है, मुझे किसी का संग आकर्षण नहीं कर सकता। यह दावा करो।

9) मुझे बाबा ने कर्मयोगी, शीतल योगी बनाया है, लेकिन गर्मयोगी नहीं बनो। हमारे मस्तक पर बाबा का हाथ है, हमारा मस्तक शीतल हो गया फिर गर्मी कौन सी? मीठे बाबा ने कहा ओ मेरे मीठे, सिकीलधे बच्चे, ऐसा कहते ही उसने हमें शीतल बना दिया, फिर गर्मी किस बात की! न काम की, न क्रोध की। माया पर भल गुस्से हो लेकिन किसी के ऊपर गुस्से मत हो। गुस्सा तो एक ऐसी चीज है जैसे गुम्बज में बैठ आवाज करो तो खुद को सुनाई देती। गुस्सा करके खुद को हैरान करते हो, दूसरा हो न हो। किसी ने कुछ रांग किया, तो उसने तो किया लेकिन मैं कहूँ - इसने क्यों किया, उसमें मैं क्यों हैरान हूँ। हरेक का कर्म, हरेक की निचाई-ऊंचाई उसे खुद ही नीचा दिखायेगी, मैं क्यों उसे कहूँ कि मैं नीचा करके ही इसको दिखाऊंगी। मैं कल्याणकारी बाबा की बच्ची, मैं किसको नीचा दिखाने की क्यों सोचूँ।

10) गुस्से की आग खुद को जलाती, “जो बनता निर्माण वह सबका पाता मान” जो निर्माण नहीं वह जग में मान पा नहीं सकता। दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाना यह भी नम्रता है। दो हाथ बांधते माना आवाज नहीं करना, शान्ति से रहना है। सिर झुकाना नम्रता की निशानी है। हरेक की दुआ लेने का साधन है निर्माण बनो। जो निर्माण होते हैं उनके लिए दिल से सबकी दुआयें निकलती हैं। जब कोई दुआ देता तो सिर पर हाथ होता है, अगर आप विश्व की दुआयें लेने चाहते हो तो अपने को निर्माण बनाओ। फिर बाबा की भी अथाह दुआयें मिलेंगी। रुहानी दृष्टि से देखो, देह की दृष्टि से नहीं तो दुआ मिलेगी। मैं कहती हूँ - ओ मेरे चैतन्य देवतायें - अगर मेरी कोई भूल है तो “सॉरी”। अगर मैंने “सॉरी” की तो दुआयें मिल जायेंगी। जिसके सिर पर दुआ नहीं उसके सिर पर रावण है। एक-एक की दुआ लो तो बाबा की दुआयें रहेंगी, रावण भाग जायेगा।

11) मेरा सदैव हंसता हुआ मूड रहे - मैं बाबा को देखूँ तो मुस्कराऊँ। श्रीकृष्ण को देखो मुस्कराता है तो प्यारा लगता है। अगर जोश वाला होता तो क्या प्यारा लगता? मुस्कराते हुए चेहरे वालों के चित्रों को हरेक गले से लगाते। परन्तु अगर मूडी होते, मूड आफ करते तो सीता का मुँह रावण की तरफ हो जाता, मूड आफ माना रावण। मूड आफ माना मूढमती। मूड-आफ माना बाबा से मुख मोड़ना। यह सब चिन्ह हैं अपने को निर्बल बनाने के।

12) बाबा को कहते हैं परमपिता, परम अर्थात् ऊंचा परमधाम निवासी, तो हम परमधाम के निवासी, परमपिता के प्यारे बच्चे हैं इसलिए इस दुनिया से परे रहो। हरेक बात हमारी दुनिया से न्यारी है। हमें तो पवित्रता का झण्डा लहराना है, जिसको दुनिया असम्भव कहे, न माने उसे सम्भव कर दिखाना है। तुम कुमार नहीं, सजनियां हो। क्या मैं शिव साजन को पसन्द नहीं, या वह मुझे पसन्द नहीं जो दूसरे को पसन्द कराते। बाबा कहे जैसे हो वैसे हो मेरे हो। जब उसने मेरा कहा फिर हम दूसरे का क्यों बनें।

13) हम योग द्वारा वायब्रेशन, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले हैं। बाबा से जितनी शक्ति लेना चाहो लो, रावण को मुट्ठी में बांध दो, अगर उसे फ्रीडम दी तो वह घर में घुस जायेगा। टेस्ट करो प्यारे बाबा को, उनके रसों को, दुनिया को टेस्ट करने की इच्छा नहीं रखो।

14) हम बाबा के योगी बच्चे हैं योगी का देखना, योगी का व्यवहार सब सिम्पुल और शीतल होता, ऐसे शीतल बनो तो अन्तर्मुखी बन जायेंगे। योगी की नींद नार्मल होती, शरीर को 5-6 घण्टे आराम देना जरूरी है, उससे ज्यादा नींद सुस्ती की निशानी है।

15) अपने पुरुषार्थ से कभी हार्टफेल नहीं होना, नाउम्मीद भी नहीं होना। अगर हम सच्ची दिल से मेहनत कर रहे हैं तो मेरी सफलता की मार्क्स नोट हैं। अगर मेरे दिल की सच्ची भावनायें हैं तो सफलता जरूर होगी। बाबा की याद में चलते जाओ, पुरुषार्थ की नींव पक्की रखो तो सब बातें समाप्त हो जायेंगी। अपने को वानप्रस्थी समझो तो सब संस्कार निर्बल हो जायेंगे। बाबा से शक्ति लेकर बलवान बनो।

16) ईश्वरीय मर्यादाओं की रक्षा करो - यही है ब्राह्मणों की राखी। जितना हम ईश्वरीय मर्यादाओं की रक्षा करते उतना रक्षक हमारी रक्षा करता है। लड़ना, झगड़ना, रोना, रूसना, चोरी करना, झूठ बोलना, जिद्द करना, अपनी मत चलाना.. यह सब भोगियों की चाल है, योगियों की नहीं। कोई जिद्द करता है तो वह ब्राह्मण नहीं शूद्र है। अच्छा.... ओम् शान्ति।